ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-11, अंक - 42, अप्रैल-जून 2024

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**
प्रकाशक : **विद्यार्थी मंच**
प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**
कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय
डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर
डॉ. प्रकाश कुमार अग्रवाल : असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी-विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल
डॉ. मृत्युंजय पाण्डेय : सुरेंद्रनाथ कॉलेज, कोलकाता
डॉ. विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगबासी कॉलेज
डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल
डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)
आवरण : अन्तरिक्ष
प्रबंधन : विनोद यादव, विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित, पद्माकर व्यास एवं नगीना लाल दास

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229
कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

कार्यालय प्रभारी

बलराम साव - 8910783904, 03326751686
संपादक - 9831497320
प्रबंध संपादक - 9681105070

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : प्राक्तन प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र
डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)
प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद
प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन
प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात
प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय
डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता
डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)
डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता
डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA- 700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :
आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल
संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070
ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com sinhameera48@gmail.com
मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009
पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये
सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 600 रुपये, आजीवन-3000 रुपये
संस्थाओं के लिए : वार्षिक-600 रुपये, आजीवन-3500 रु.
डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

06 संस्तुति

आलेख

07 श्रीनारायण पाण्डेय : प्रेमचन्द की जुबानी — शिक्षा संस्थान, शिक्षितों एवं युवकों की कहानी।

12 सेवाराम त्रिपाठी : व्यंग्य लेखन : ये माजरा क्या है?

16 राजेन्द्र परदेसी : निराला की कविताओं में विवेकानंद का भाववाद

20 डॉ. रवीन्द्र कुमार : शिक्षा में आनन्द : सनातन परिप्रेक्ष्य

अनुशीलन

23 धनेश दत्त पाण्डेय : सृजनात्मक साहित्य की आनुवंशिकीः सन्दर्भ चंद्रकिशोर जायसवाल की कहानियां भाषा एवं शिल्प

33 डॉ. रीता सिन्हा : 21वीं सदी का कथा साहित्यः बदलता परिदृश्य

शोधार्थी की कलम से

41 –श्वेता शर्मा : समकालीन हिंदी उपन्यासों में वृद्ध जीवन की विडंबनाएं (चयनित उपन्यासों के आधार पर)

47 घुंघरू परमार : हिन्दी निबंध-साहित्य में रवीन्द्रनाथ ठाकुर

53 श्रद्धा गुप्ता : हिन्दी का व्यंग्य साहित्य और परसाई

संस्मृति

58 नवनीत मिश्र : बात निकली है तो फिर . .

62 आलोक वर्मा : लफ्जों का संजीदगी से इस्तेमाल करने की सलाह देने वाले प्रख्यात पंजाबी कवि सुरजीत पातर नहीं रहे-

समय की शिला पर

64 नरेश अग्रवाल : आत्मकथ्य, कविता एवं परिचय

सरगम के सुर साधे

68 नूर मुहम्मद 'नूर' : मेरी ग़ज़ल यात्रा

कहानी

71 संजय कुमार सिंह : परिवर्तन

75 रूपसिंह चंदेल : बड़े खेल

77 जयराम सिंह गौर : सही निर्णय

भाषांतर

83 अस्मिता सिंह : रूसी कवि अन्ना अख्मातोव की कविताओं का हिन्दी अनुवाद

शोध समीक्षण

सृजन

संचार

पुस्तकायन्

85 गीता दूबे : मृदुला गर्ग का उपन्यास : ये नायाब औरतें

89 निशान्त : यतीश कुमार की कविता पुस्तकःअन्तसकी खुरचन

95 संयोगिता वर्मा : निर्मला तोदी का कहानी संग्रह : रिश्तों के शहर

99 माला कुमारी : दाता पीर : साधारण जीवन की असाधारण गाथा

व्यंग्य्

101 आशीष दशोत्तर : अगर ये फ़ैसला है तो फ़ैसला क्या है?

104 अनूप श्रीवास्तव : वामन का मंतव्य !

यात्रा वृत्तांत

106 विनोद साव : महात्मा मार्ग

प्रवासी कलम्

115 डॉ. कृष्ण कन्हैया ग़ज़लें

कविता

117 शैलेन्द्र शान्त : दृश्य बदल नहीं रहे, लगभग असंभव, खोना-पाना, कालजयी!, रचिये, सुकून, लौटना

118 राज्यवर्द्धन : सोना 'सोना' है!, सुख दुःख, सत्ता, काल-चक्र, आम -आदमी, घर, महबूब शहर

120 अशोक आशीष : रेत कला, अट्टहास का उत्सव, कैक्टस

122 अशोक सिंह : छोटे लोग, दृश्यों में जीवन और जीवन के दृश्य,

गतिविधियाँ

124 गीतांजलि बहुभाषी साहित्यिक समुदाय :

124 जर्मनी एवं यू. के. के. बीच साहित्यिक-सांस्कृतिक सेतु बंधन संपन्न

125 लेख आमंत्रित

परिशिष्ट

126 समीक्षार्थ पुस्तके प्राप्त हुई :

संस्तुति

साहित्य के संसार में बाजार की आवाजाही ने भयंकर विडंबना भर दी है।

साहित्य में शोध और अनुसंधान, समीक्षा और सृजन किसी हेतु के अधीन हो गये हैं इसलिए स्वतः स्फूर्त या स्वचालित कुछ भी नहीं है। कसौटियाँ रखी गईं हैं योग्यता के माणदंड निर्धारित किए गए हैं, लेकिन उसका स्वरूप इतना बोगस और धाँधली भरा है कि हत्वाक्य रह जाना पड़ता है। विद्यालय से महाविद्यालय तक के साहित्य अध्ययन क्षेत्र में पाठ्यक्रमों का निर्धारण हो सकता है परंतु परास्नातक के पश्चात शोध और अनुसंधान में निर्धारित पाठ्यक्रम हैरान करने वाली बात है। संकीर्ण और सीमित दायरे में शोध क्षेत्र को बाँधने की कवायद अत्यंत बेमानी है। बाजार का जिंदगी और रोटी की रेस में जुटा विद्यार्थी समाज तरह-तरह की निगरानियों से घिरा छटपटा रहा है, मुक्ति कहाँ है दूर-दूर तक कोई उन्हें उत्तर नहीं देता- जिंदगी जहाँ से शुरु होती है – वहीं बड़े-बड़े खड्ड बने हैं – चापलूसी, जी हुजूरी और फालतू बातों की खोज में भटकता मन सच पूछा जाए तो संशयग्रस्त भटकता रहता है। एक शोधार्थी शोध निदेशक के इच्छा क्षेत्र का बँधुआ मजदूर होता है। उसे एक खाके के अंतर्गत बँधकर काम करना होता है, अतः स्वयं शोध के संधान से बहुत दूर रह जाता है। शोधार्थी एवं शोध निदेशक के मध्य का संसार आज के समय में अस्सी प्रतिशत ऐसा ही है। विशेषकर हिंदी साहित्य इस रोग से आक्रांत है। दिनों दिन शोध और समीक्षा का दायरा संकीर्ण होता जा रहा है – नई पीढ़ी में काम करने की यांत्रिकता और सोच की गतानुगतिकता इतनी बढ़ गई है कि मौलिकता का सर्वथा अभाव हो गया है। काम कम और ढोल बजाई एवं मुँह दिखाई की प्रवृत्ति अधिक हावी है।

खैर, साहित्य से रोजी-रोटी का संबंध ही अध्येता को यांत्रिक बना रहा है। अर्थ की लीला अपरंपार है। साहित्य और कला के क्षेत्र में भी कुछ कर ले जाने के लिए आर्थिक स्रोत और संयोजन पर जितना श्रम किया जाता है उतना विषय के तहों तक पहुँचने के लिए नहीं किया जाता। प्रचार-प्रसार के ढोल मंजीरों के वगैर श्रम का कोई नाम नहीं होता। मनोयोग से काम करना एक बात है जबकि प्रचारकों की संख्या जुटाना एक अलग ही तरह का तंत्र तैयार करता है जिसमें हासिल कम भटकाव अधिक रहता है।

मुक्तांचल अपनी उद्घोषणा शोध, समीक्षण, सृजन और संचार को लेकर चलने की कोशिश में रत है। हिंदी भाषा और साहित्य के प्रायः सभी वरिष्ठ लेखक भारत ही नहीं, इसके बाहर भी मुक्तांचल में लेखन के स्तर पर सक्रिय हैं। लेखकों का अवदान अप्रतिम है, लेकिन पाठक बहुत कम हैं और शायद कम होते जा रहे हैं, क्योंकि अभिमत का कॉलम प्रायः खाली ही चला जाता है 'मुक्तांचल' के माध्यम से मेरी यह अपील है कि सुधीजन न केवल लिखें और प्रतिक्रिया प्रेषित करें।

मुक्तांचल अंक - 43 जुलाई-सितंबर 2024 डॉ. रमेश कुंतल 'मेघ' के साहित्य संसार पर आलोकपात करेगा, अनेक वरिष्ठ लेखकों ने अपने आलेख देने की प्रतिश्रुति दी है। आप भी इस मनीषी के कार्य पर अध्ययन एवं मूल्यांकन जुलाई 24 के अंत तक प्रेषित कर सकते हैं।

संपादक